जून 2024, अंक 8

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

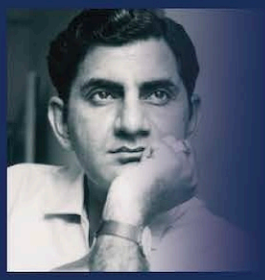

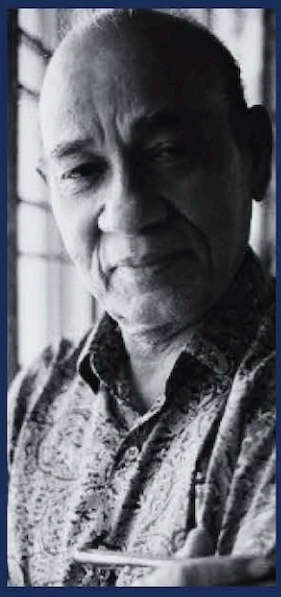

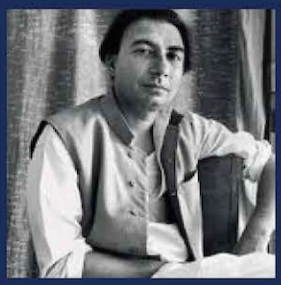

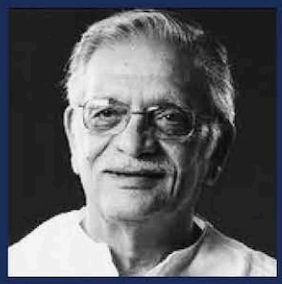

#हिंदी फ़िल्मों के गीतकार

#चंदू चैम्पियन

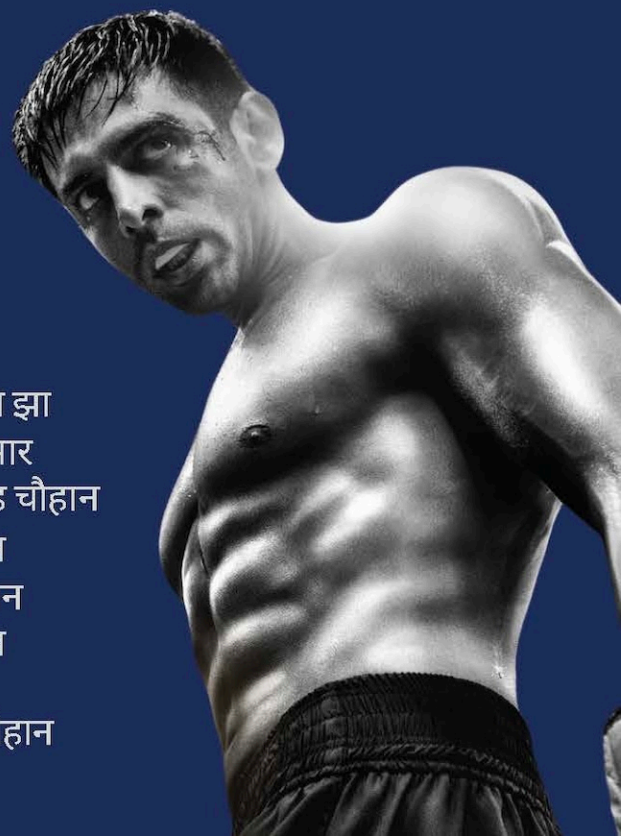

- अश्वनी सिंह
- अनीता नेगी
- गीता श्री
- संजय पटेल
- डॉ.रक्षा गीता
- ममता सिंह
- अजीत राय
- विनोद कुमार
- शशांक दुबे
- डॉ. प्रकाश हिंदुस्तानी
- निराला बिदेशिया
- सृष्टि उपाध्याय
- सैयद एस तौहीद
- डॉ. स्वप्निल देशमुख
- तेजेन्द्र शर्मा
- राकेश आनंद बख्शी
- चंद्र प्रकाश झा
- यतीश कुमार
- कंचन सिंह चौहान
- यूनुस ख़ान
- जाहिद ख़ान
- यतींद्र मिश्र
- डॉ. सागर
- अवशेष चौहान

आवरण: आर वर्क

जून, 2024

अंक 8

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन:

अजय ब्रह्मात्मज

अनुक्रम

सागर से डॉ सागर 7

डॉ. सागर

मजरूह सुल्तानपुरी: रक्स करना है तो पाँव की ज़ंजीर ना देख 13

यूनुस ख़ान

प्रदीप: आँखों आँखों में मेरे मन में उतरने वाले बोलो तुम कौन हो? 27

संजय पटेल

शैलेन्द्र 34

ज़ाहिद ख़ान

राजिंदर क्रिशन: पल –पल दिल के पास तुम रहते हो 39

गीताश्री

समीर: नब्बे का दशक और हम 49

कंचन सिंह चौहान

एस एच बिहारी 63

चंद्र प्रकाश झा

हसरत जयपुरी- 'तुम मुझे यूँ भुला न पाओगे' 72

ममता सिंह

नीरज: छलिया रे, ना बुझे है, किसी जल से ये जलन 78

शशांक दुबे

चित्रकार, शायर और फ़िल्मी गीतकार राहत इंदौरी 86

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

मोती बीए: एक तरानेबाज का फसाना, जिसे बिसरा गया जमाना 92

निराला बिदेसिया

प्रियवर कविवर इन्दीवर: हिन्दी सिनेमा में कवि 101

डॉ . राजीव श्रीवास्तव

संतोष आनंद: मध्यमवर्गीय संवेदनाओं के गीतकार 114

सैयद एस तौहीद

असद भोपाली 125

सृष्टि उपाध्याय

जावेद अख़्तर : जादुई गीतों के रचयिता 131

अवशेष चौहान

क़मर जलालाबादी 141

अनीता नेगी

साहिर लुधियानवी: रुमानियत, इंकलाब और स्त्री–मन का गीतकार 146

अखिलेश कुमार मौर्य

शकील बदायूनी: वह गीतकार जिसने बहाई सामाजिक सौहार्द की गंगा 152

विनोद कुमार

हिन्दी सिनेमा के गीतों में साहित्य... 163

तेजेन्द्र शर्मा

फ़िल्मी गीतों में पितृसत्ता और स्त्री छवि 178

डॉ. रक्षा गीता

बकलम खुद 189

इरशाद कामिल

आनंद बक्षी के आखिरी दो साल 2000–2002 195

राकेश आनंद बख्शी

गुलज़ार सा'ब हज़ार राहें मुड़ के देखीं 230

यतीन्द्र मिश्र

साहिर: एक मुकम्मल शायर-गीतकार 244

शरद दत्त

चंदू चैंपियन - संकल्प की अबाध नदी 268

यतीश कुमार

चंदू चैंपियन: समय के गर्भ में छुपी नाटकीय संघर्ष कथा 274

डॉ. स्वप्निल देशमुख

चंदू चैंपियन 278

अजय ब्रह्मात्मज

77 वां कान फिल्म समारोह: कान फिल्म समारोह और भारत 284

अजित राय

हिंदुस्तानी सिनेमा और संगीत 290

अश्वनी सिंह

मेरी बात

फिर से यही लग रहा था कि मैंने एक असंभव योजना बना ली है। पाठकों की राय बनी थी कि हिंदी फिल्मों के गीतकारों पर केंद्रित अंक आए। मैंने भी झोंक में स्वीकार कर लिया। सोचा कि आसान होगा। फिर प्रारूप तैयार करने लगा तो एहसास हुआ कि यह तो मुश्किल योजना है। इस द्वंद्व और संशय की घड़ी में यूनुस ख़ान ने आगे बढ़कर सहयोग दिया। उन्होंने गीतकारों और लेखकों के नाम सुझाए। खुद कुछ लेखकों को फोन किये और उनसे वादा लिया कि वे समय पर लेख भेज देंगे। अधिकांश ने वादा पूरा किया।

सारे गीतकारों की तस्वीरें कवर पर लेना नामुमकिन था। कवर पर लगी तस्वीरें प्रतीकात्मक हैं। लगभग 18 संगीतकारों पर छोटे-बड़े लेख हैं। सभी लेखकों ने बड़े मनोयोग से गीतकारों की महत्ता और विशेषता को रेखांकित किया है। मैं पूर्णता और परफेक्शन के चक्कर में नहीं रहता। अपने तरफ़ से पूरी कोशिश करता हूं। जो कुछ छूट जाता है, उसका क्या अफसोस करना? ईमानदारी से जितना हो गया, उतना ही बेहतर है। अगर कोई प्रेरित होकर इन प्रयासों को गाढ़ा और विस्तृत करे तो अत्यंत खुशी होगी। फिलहाल सभी लेखकों को धन्यवाद!

इस अंक में डॉ. सागर ने बक़लम ख़ुद लिखा है। उन्होंने मेरा आग्रह स्वीकार किया। इस अंक में तीन गीतकारों पर लिखी पुस्तकों के अंश हैं। इरशाद कामिल,

गुलज़ार और आनंद बख्शी... मैं इरशाद कामिल, यतींद्र मिश्र और राकेश आनंद बख्शी का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने इन अंशों को प्रकाशित करने की अनुमति दी।

इस अंक में चंदू चैंपियन फिल्म पर तीन लेख हैं। कबीर खान निर्देशित चंदू चैंपियन 14 जून को रिलीज हुई। यह फ़िल्म एक अलग किस्म की बायोपिक है, जिसमें पूरी टीम ने ईमानदारी से काम किया है। खास कर शीर्षक भूमिका निभा रहे कार्तिक आर्यन की मेहनत और एकाग्रता ने फिल्म को ऊंचाई दी। नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा के सहयोग से सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन आगे बढ़ती जा रहा है। यह आठवां अंक है। इसे अभी तक 17567 व्यू मिले हैं। पाठकों का सहयोग भी सराहनीय है।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें।

अजय ब्रह्मात्मज

जून 2024

मुंबई

सागर से डॉ सागर

डॉ. सागर

रचना रचनाकार की ज़मीन एवं वहां के परिवेश की पैदाइश होती है।

सागर से डॉ सागर बनने की कहानी आपके सामने पेश कर रहा हूं।

मेरी ज़मीन भोजपुरिया ज़मीन है और मेरा परिवेश गीत-संगीत से भरा हुआ है।

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले का निवासी हूं। वहीं के लोक राग से ही मैंने गीत बुनना सीखा है।

मेरी प्रारंभिक शिक्षा मेरे गांव के 'मेथोडिस्ट मिशन स्कूल' से हुई, जहां दूसरी कक्षा से ही मैंने गीत लिखना शुरू कर दिया था।

जब मैं बड़ा हो रहा था उस दौर में "लौंडा-नाच" बहुत मशहूर हुआ करते थे, जो हर तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं शादी - विवाह में यह मंडली नाटक करती थी और उसी दौर में बिरहा गायन भी खूब जोर-शोर से चल रहा था। उस ज़माने के मशहूर गायक बुल्लू, हीरा, परशुराम, काशी, बेचन, ओम प्रकाश यादव आदि अपना रंग जमाये हुए थे। बिरहा और नाटक-मंडली का मेरे जीवन पर गहरा असर रहा है। तीज- त्योहार, शादी-विवाह, धनरोपनी एवं जंतसार जैसे लोकराग ने मुझे गीतकार बनाया है। मैं खुद खेतों में श्रम करता था और गीत गाता था।